एस.एस. कॉलेज जहानाबाद
विभाग - हिंदी
विषय - भाषाविज्ञान
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा, भाग - 3
शिक्षण माध्यम - व्हाट्स एप
समय 11.00 से 12.30
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा

छात्र - छात्राओं !

पाठ - भाषा विज्ञान की उपयोगिता अथवा प्रयोजन।

पिछले वर्ग में विचार किया गया था कि भाषाविज्ञान के साथ उसके अनेक प्रकार, शाखाएँ शैली विज्ञान, अनुवाद विज्ञान, भाषा-शिक्षण विज्ञान, कोश विज्ञान इत्यादि अनेक आयामों से जुड़ता हुआ यह विज्ञान अपनी विशिष्टताओं का परिचय देता है। इस संबंध अनेक भाषा-विज्ञानियों ने अपने मत दिये जिनमें मतभिन्नता अधिक उभरी है। जैसा कि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भी है, भाषाविज्ञान की उपयोगिता क्या है? इस संबंध में विचार अपेक्षित है।

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने अपनी पुस्तक 'भाषाविज्ञान की भूमिका' में भाषाविज्ञान के प्रयोजन को लेकर लिखा है कि - "भाषा विज्ञान के द्वारा भाषा का सम्यक् ज्ञान होता है। मनुष्य जिन वस्तुओं से काम लेता है, उसके विषय में जानना चाहता है। जितना काम हम भाषा से लेते हैं उतना शरीर के अतिरिक्त और किसी वस्तु से नहीं लेते। फिर भी स्थिति यह है कि न तो शरीर की रचना या क्रिया के सम्बन्ध में जानते हैं और न भाषा के संबंध में। शरीर की चिंता चिकित्सक पर छोड़ देते हैं और भाषा की चिंता व्याकरण पर। पर जिस वस्तु से दिन-रात काम लेना हो उसकी थोड़ी-बहुत जानकारी तो प्रत्येक व्यक्ति को रहनी चाहिए। सदा दूसरों से सहायता लेना न सम्भव है न उचित।" (भाषाविज्ञान की भूमिका, पृष्ठ-78)

आचार्य शर्मा का यह कथन भाषाविज्ञान के

प्रयोजन को तो सिद्ध करता है साथ ही बिल्कुल व्यावहारिक उदाहरणों के साथ स्वाभाविक रूप से हमारी जिज्ञासाओं को तृप्त करता है। इसी तरह वे सात-आठ बिन्दुओं की ओर भाषाविज्ञान के प्रयोजन स्पष्ट करते हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भी संक्षेप में एक-एक, दो-दो वाक्यों में बाह्य बिन्दुओं की ओर ध्यान आकर्षित कर भाषाविज्ञान के लाभ की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण स्वरूप व्याकरण और भाषाविज्ञान के अन्तर को देखा जाय — व्याकरण किसी शब्द का अर्थ खंड-खंड करके उसका ठीक स्वरूप दिखाता है। वह सीधे किसी भाषा के नियम तथा साधु रूप (शुद्ध रूप) आदि सामने रख देता है, वह किसी कारण की ओर इशारा नहीं करता कि क्यों यही शुद्ध रूप होगा। जैसे कोई संस्कृत में 'एकादश' नहीं कहकर 'एकदश' कहे तो व्याकरण केवल इसे असाधु प्रयोग कहकर मौन हो जायेगा, किन्तु भाषाविज्ञान स्पष्ट करेगा कि एकदश ही कभी शुद्ध प्रयोग के रूप में चलता होगा पर बाद में 'द्वादश' के सादृश्य से उसे 'एकादश' हो जाना पड़ा।

इसी तरह व्याकरण इतना ही कहकर मौन हो जाता है कि बंगला में अपेक्षाकृत लिंग का ध्यान कम रखा जाता है, किन्तु भाषाविज्ञान उसका कारण भी देता है कि संभवत: यह आस-पास की मुंडा भाषाओं का प्रभाव है। इसप्रकार व्याकरण के मूल का भी भाषाविज्ञान विवेचन करके स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। भाषाविज्ञान की यह उपयोगिता भाषा में शब्दों में होनेवाले स्वाभाविक परिवर्तनों, परिवर्तनों के कारणों के उल्लेख में देखी जा सकती है। यहाँ भाषा का सांगोपांग परिचय मिलता है। भाषा क्या? उसके अंग क्या हैं? ध्वनियों का उच्चारण कैसे होता है? एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि का भेद कैसे हो जाता है? 'क' से 'ख' का उच्चारण-भेद कैसे हो जाता है? एक भाषा की ध्वनियों से दूसरी भाषा की ध्वनियों में उच्चारण भेद कैसे होता है? ~~[illegible]~~ शब्द कैसे प्रयोग में आते हैं? उनके अर्थ में भेद कैसे उत्पन्न हो जाते हैं? इत्यादि अनेक प्रश्न हैं जिनका समाधान भाषाविज्ञान से प्राप्त होता है। शेष अगली कक्षा में। (प्रेम [illegible]

16.5.2020